श्री राजेन्द्र-धनचन्द्र-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति
गुरुवरों के विचारों/कार्यों को समर्पित

यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

संस्थापक- प. पू. तपस्वी योगिराज, संयमवयः स्थविर श्री शान्तिविजयजी म. सा.
प्रेरक- माण्डवपुर तीर्थप्रेरक, प्रवचनकार प. पू. आचार्यप्रवर श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

सम्पादक- पंकज बी. बालड़ स. सम्पादक- कुलदीप डाँगी 'प्रियदर्शी'

* वर्ष : 24 * अंक : 10 * मोटेरा, अहमदाबाद * दिनांक 15 अगस्त 2018 * पृष्ठ : 4 * मूल्य 5/- रुपये

59 वें अवतरण दिवस पर विशेष-

तीर्थोद्धारक, संघ एकता के शिल्पी, बहु प्रतिभा सम्पन्न आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.

उदयपुर, (स. सं),

प्रकृति का नियम है कमल कीचड़ में ही खिलता है, गुलाब काँटों में ही पुष्पित होता है। मनुष्य अपने पुरुषार्थ, साधना-आराधना एवं तप-जप से सर्वोच्च शिखर को प्राप्त कर सकता है, इसमें कुल, जाति, धर्म का महत्त्व गौण है। ज्ञानियों ने मनुष्य जन्म को दुर्लभ बताया है और कहा है कि इसको प्राप्त करने के पश्चात् मानव अपनी काया के द्वारा धर्माचरण करके अपना आत्मकल्याण नहीं करता है तो यह जन्म व्यर्थ चला जाता है। जैनधर्म ऐसा महान धर्म है जिसमें अनेक आत्माओं ने अंगीकार कर स्व-पर का कल्याण करते हुए जिनशासन के अभूतपूर्व कार्य किए जिन्हें कभी भी विस्मृत नहीं किया जा सकता है। इतिहास साक्षी है कि जैन कुल में जन्मे ही नहीं वरन् इतर कुलों में जन्मे अनेक व्यक्तियों ने जैनधर्म को अंगीकार किया और अपना आत्मकल्याण किया। इस मनुष्य भव को सार्थक करने का परिश्रम किया ऐसी ही विरल विभूति ने, जिसने रबारी (देवासी) कुल में जन्म पाकर जैन भागवती प्रव्रज्या स्वीकार की और वर्तमान में अपने गुरुगच्छ एवं कुलकीर्ति की पताका चिहुँओर लहराई है, उस महामहर्षि का नाम है- आचार्यश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा.।

आपका अवतरण भक्ति और शौर्य की धर्मधरा राजस्थान के बागरा (बिलबरसर) में श्रीमती जरसीबाई की कुक्षी से श्री सुरतारामजी रबारी (देवासी) के गृह आँगन में विक्रम सम्वत् 2016, श्रावण शुक्ला 3 को हुआ। पिता श्री सुरतारामजी के साथ ही परिजनों में हर्ष की लहर व्याप्त हो गई। पिताश्री ने पुत्र का नामकरण राणा रखा। बाल्यकाल से ही प्रतिभावान होनहार विद्यार्थी के रूप में योग्य शिक्षा अर्जित की। 'होनहार बिरवान के होत चिकने पात' यह लोकोक्ति पूर्णतया राणा के जीवन पर चरितार्थ हुई। पू. संयमवयःस्थविर, योगिराज श्री शान्तिविजयजी म. सा. के दर्शनार्थ के समय उन्होंने अपने आत्मबल से जान लिया कि यह बालक भविष्य में अपने कुल का नाम रोशन करेगा। जब राणा ने अपने आपको गुरु चरणों में समर्पित कर संयम की भावना व्यक्त की तो योगिराजश्री ने मात्र 14 वर्ष की आयु वाले राणा को अपने प्रथम शिष्य के रूप में विक्रम सम्वत् 2031, पौष शुक्ला 6, सन् 1974 को बागरा के श्री राजेन्द्रसूरि हाई स्कूल में हजारों गुरुभक्तों के उपस्थिति में भागवती प्रव्रज्या प्रदान कर मुनि नाम श्री जयरत्नविजयजीप्रदान किया। जैसे ही योगिराज के मुख से नाम की घोषणा हुई तो सम्पूर्ण सभा मण्डप में जयकारों का नाद गुँजायमान हो गया।

सरल स्वभावी, शान्तमना, योगिराजश्री शान्तिविजयजी म. सा. के विनयी शिष्य बनकर अपनी संयम यात्रा गुरुवचन तहत्ति मानते हुए आपने गुरु प्रदत्त अनेक कार्य सम्पादित किए। आपश्री की बृहद् दीक्षा विक्रम सम्वत् 2033, माघ शुक्ला 3, सन् 1976 को माण्डवपुर तीर्थ में कविरत्न आचार्यदेव श्रीमद्विजय विद्याचन्द्र-सूरीश्वरजी म. सा. के करकमलों से प्रदान हुई।

प. पू. योगिराजश्री ने एक कुशल मूर्त्तिकार की भाँति इस मूर्त्ति को ज्ञान-ध्यान की छैनी-हथौड़ी से तराशा और गुरुगच्छ और जिनशासन की प्रभावना की सदा प्रेरणा प्रदान की जिसके परिणाम स्वरूप आपश्री ने अपने गुरुदेवश्री के सान्निध्य में अनेक स्थानों पर शासन प्रभावना के कार्य सम्पादित किए। गुरुगच्छ की कीर्ति कैसे फैले इसका सदैव ध्यान रखा और इसके लिए समाज को सही दिशा निर्देश प्रदान करते हुए अपना मंतव्य प्रस्तुत किया। गुरुकृपा का ही सुफल है कि समाज ने आपश्री के आदेश का अक्षरसः पालन करते हुए निर्विरोध पालन किया जिसका सुपरिणाम वर्तमान में स्पष्ट रूप से झलकता है।

अपने गुरुदेवश्री द्वारा संस्थापित एवं आपश्री के द्वारा प्रेरित अनेक स्थानों पर तीर्थ स्थापना की जिनमें श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-मोटेरा (अहमदाबाद), श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-देलवाड़ा (आबू), श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-श्री जीरावला तीर्थ, श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार धाम-झरड़ाजी-डोरडा, श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार-काया-उदयपुर पर तीर्थरूप जिनमन्दिर, गुरुमन्दिर की स्थापना करते हुए विकास किया। आपकी सद्प्रेरणा से श्री गौड़ीपार्श्वनाथ-राजेन्द्रसूरि मातुश्री धाम, आकोली में निर्मित हुआ। वर्तमान में अतिप्राचीन तीर्थ श्री माण्डवपुर का विकास जिस द्रुतगति से चल रहा है वह आपकी दूरदर्शिता, संकल्पशक्ति का परिचायक है। सम्पूर्ण देश ही नहीं अपितु विदेश के गुरुभक्तों ने इस तीर्थ को महातीर्थराज की उपाधि से अलंकृत करते हुए कहा है कि भविष्य में यह तीर्थ भूमि तीर्थों की अग्रिम पंक्ति में अपना स्थान बनाएगी और इस सबका श्रेय जाता है प. पूज्यश्री जयरत्नसूरिजी म. सा. को।

आपश्री द्वारा प्रेरित अनेक संस्थाएँ धार्मिक, सामाजिक एवं जनकल्याण के अनुपम कार्य वर्तमान में कर रही है, जिनमें- श्री महावीर जैन श्वेताम्बर पेढ़ी (ट्रस्ट), श्री वर्धमान-राजेन्द्र भाग्योदय ट्रस्ट (संघ)-श्री माण्डवपुर तीर्थ, श्री शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट-अहमदाबाद, श्री गौड़ पार्श्वनाथ-राजेन्द्रसूरि मातुश्री धाम चेरिटबल ट्रस्ट-आकोली, श्री सौधर्मबृहत्तपोगच्छीय राजेन्द्रसूरि स्मारक संघ उदयपुर, श्री राजेन्द्रसूरि सेवा संस्थान-उदयपुर एवं श्री यतीन्द्र वाणी प्रकाशन-मोटेरा (अहमदाबाद) प्रमुख हैं। आपकी प्रेरणा से श्री यतीन्द्र वाणी प्रकाशन द्वारा पिछले 24 वर्षों से नियमित हिन्दी पाक्षिक समाचार-पत्र 'यतीन्द्र वाणी' मोटेरा-अहमदाबाद से प्रकाशित किया जा रहा है।

आपश्री एक कुशल प्रवचनकार भी हैं और अपनी विशिष्ट प्रवचन शैली और स्पष्टवादिता के कारण शीघ्र ही आपने गुरुगच्छ में अपना विशिष्ट स्थान बनाया है। साहित्य प्रेमी होने के कारण आपने श्री माण्डवपुर दर्शन, श्री भीनमाल दर्शन, स्वाध्याय दर्शन (स्तोत्र संग्रह), माण्डवपुर पंचांग व कैलेण्डर चतुर्थ संस्करण आदि का प्रकाशन करवाया है।

आपने शासन प्रभावना के कार्य करते हुए उपधान तपाराधना, जिन प्रतिष्ठा, तीर्थ जीर्णोद्धार, गुरु स्मारकों की स्थापना, छःरि पालित संघ, ओली आराधना के साथ ही अनेक श्रीसंघों में संगठन स्थापित करते हुए अनेकों प्रेरणादायी कार्य गुरुभ्राता मुनिराजश्री अशोकविजयजी म. सा. एवं प्रथम शिष्य मुनिराजश्री आनन्दविजयजी के साथ निष्पादित किए हैं। वर्तमान में मुनिश्री अमृतरत्नविजयजी व मुनिश्री जिनरत्नविजयजी म. सा. आदि तीन शिष्य विद्यमान है।

आपकी बहुमुखी प्रतिभा एवं कुशल योग्यता से प्रभावित होकर पुण्य-सम्राट गुरुदेव श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के आदेशानुसार कालधर्म के पश्चात् श्री त्रिस्तुतिक जैन संघ ने पुण्य स्थली श्री माण्डवपुर तीर्थ में विक्रम सम्वत् 2074, वैशाख कृष्णा अष्टमी, बुधवार, दिनांक 19-4-2017 को अनेक श्रीसंघों एवं हजारों गुरुभक्तों की उपस्थिति में पट्टधररत्न के रूप में श्री नित्यसेनसूरीश्वरजी एवं श्री जयरत्नसूरीश्वरजी को आचार्य पदवी से अलंकृत किया और आपश्री ने आचार्यश्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. को गच्छाधिपति घोषित किया। आपने भी आचार्य पदवी की गरिमा और गौरव के अनुरूप अल्प समय में ही अपनी प्रतिभा और योग्यता से गच्छाधिपति के साथ वर्तमान में उग्र विहार करके मध्यप्रदेश, गुजरात, राजस्थान, सौराष्ट्र आदि प्रान्तों की स्पर्शना करते हुए अनेक शासन प्रभावना के उत्कृष्ट कार्य सम्पादित करते हुए समाज को एकसूत्र में पिरोने का भगीरथ प्रयास किया, जिसके अनेक उदाहरण सभी ने प्रत्यक्ष में देखे है।

आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. के विराट व्यक्तित्व और कृतृत्व को शब्दों में बान्धना सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। आपके 58 वें अवतरण दिवस पर आपश्री के श्रीचरणों में वन्दना करते हुए आपके दीर्घायु एवं उज्ज्वल अनागत की कामना करते है। आप जीवन भर इसी प्रकार जिनशासन की धर्मध्वजा को फहराते हुए गुरुगच्छ कीर्ति की सुवास चिहुँओर महकाते रहें।

-दिनेश यति

गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में उज्जैन में धर्मगंगा प्रवहमान

नित्य गुरुभक्तों का आगमन

उदयपुर, (स. सं),

प. पू. पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द की निश्रा में त्रिस्तुतिक जैन श्रीसंघ, उज्जैन के तत्वावधान में चल रहे स्वर्णिम चातुर्मास 2018 में अनेक धार्मिक, सामाजिक एवं जनकल्याण के कार्यक्रम हो रहे हैं।

गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में पुण्य-सम्राट प्रवचन मण्डप में नित्य भक्तामर, गुरुगुण इक्कीसा, प्रवचन आदि कार्यक्रमों में नगरवासियों के साथ ही देश के विभिन्न नगरों से श्रीसंघ एवं गुरुभक्तों का आवागमन निरन्तर गतिमान है। इसी क्रम में फतापुरा श्रीसंघ ने आकर दर्शन-वन्दन कर आशीर्वाद प्राप्त करने के साथ ही गच्छाधिपतिश्री से प्रतिष्ठा हेतु भावभरी विनती प्रस्तुत की। गच्छाधिपतिश्री ने फतापुरा के ऐतिहासिक मन्दिर की प्रतिष्ठा का मुहूर्त 21 फरवरी 2019 प्रदान किया तो सारा पाण्डाल गुरुदेवश्री के जयकारों से गुँजायमान हो गया। पूज्या साध्वीश्री

आयम्बिल कराते फतापुर श्रीसंघ

शशिकलाश्रीजी म. सा. की पुण्यतिथि पर गच्छाधिपतिश्री की निश्रा में 250 आराधकों ने आयम्बिल किए जिसका पूरा लाभ फतापुरा जैन श्रीसंघ ने लिया। समाज में चल रही तपस्याओं की श्रृंखला में अनेक तपस्वी जुड़ रहे है और कई मासक्षमण की ओर अग्रसर हैं।

पुण्य-सम्राट प्रवचन मण्डप में पूज्य गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. की निश्रा में मातृ-पितृ वन्दना का भव्य आयोजन किया गया जिसमें संघ के सभी सदस्यों ने भाग लिया। सूरत से आए हार्दिकभाई शाह ने भावपूर्वक प्रस्तुति में बताया कि संसार में माता-पिता का क्या महत्व है ? उज्जैन में प्रथम अवसर है कि माता-पिता की वन्दना सामूहिक रूप से की गई हो। गच्छाधिपतिश्री ने प्रवचन प्रदान करते हुए कहा कि हमें यह मनुष्य जन्म मुश्किल से मिला आप इस मनुष्य जीवन और उसकी सार्थकता को समझें। जो ज्ञान की गंगा में स्नान करते हैं, वह अपने जीवन को शुद्ध और निर्मल करते हैं। उन्होंने एकता की ओर जोर देते हुए कहा कि एकता से समाज मजबूत बनता है और प्रगति करता है। मुनिराजश्री सिद्धरत्नविजयजी म. सा., मुनिराजश्री विद्वद्रत्नविजयजी म. सा. एवं मुनिश्री प्रशमसेनविजयजी म. सा. ने सारगर्भित प्रवचन प्रदान किया।

श्री सागरानन्दसूरीश्वरजी म. सा. की पुण्यतिथि के उपलक्ष्य में प्रातः 6.30 बजे गच्छाधिपतिश्री एवं श्रमणमण्डल की निश्रा में श्री ऋषभदेव छगनीराम पेढ़ी, खाराकुआं केसरियाजी जिन मन्दिर में श्री भक्तामर महास्तोत्र का सामूहिक पाठ हुआ।

गच्छाधिपतिश्री संयम वन्दन यात्रा को आशीर्वाद प्रदान करते

संयम वन्दन यात्रा ने गच्छाधिपतिश्री एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द का आशीर्वाद प्राप्त कर गच्छाधिपतिश्री से परिषद् की आगामी संगठनात्मक कार्य योजना पर मार्गदर्शन प्राप्त किया।

गच्छाधिपतिश्री एवं श्रमण-श्रमणिवृन्द के दर्शनार्थ राजस्थान, गुजरात, दक्षिण एवं मध्यप्रदेश के अनेक नगरों से श्रीसंघों एवं गुरुभक्तों का आगमन निरन्तर जारी है।

एक दिवसीय महिला शिविर

उदयपुर (स.सं.)

मालव की धर्मनगरी कुक्षी में परम पूज्या साध्वीश्री अविचलदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-6 की निश्रा में चल रहे चातुर्मासिक कार्यक्रमों में महिलाओं के एक दिवसीय शिविर का आयोजन किया गया। जिसमें साध्वीजीश्री ने स्नात्र-पूजा की विधि के बारे में विस्तार से समझाते हुए सभी को करने की प्रेरणा प्रदान की। नगर की अनेक महिलाओं ने शिविर में भाग लिया।

प. पू. साध्वीश्री शशिकलाश्रीजी म. सा. की पुण्य तिथि पर गुरुगुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें साध्वीजीश्री के अतिरिक्त अनेक वक्ताओं ने उनके गुणों का स्मरण करते हुए गुणानुवाद किया। कुक्षी श्रीसंघ द्वारा इस अवसर पर स्वामीवात्सल्य का आयोजन किया गया। नित्य दर्शन-वन्दन करने गुरुभक्तों का आगमन हो रहा है।

क्रोध 100 तथ्य पुस्तक का लोकार्पण

उदयपुर (स.सं.)

थाने-मुम्बई में चातुर्मासार्थ विराजित पू. आचार्यश्री अरविन्द-सागरसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में दादा गुरुदेवश्री के परम गुरुभक्त, धर्मनिष्ठ, सुश्रावक श्री जे. के. संघवी द्वारा लिखित पुस्तक 'क्रोध 100 तथ्य' का लोकार्पण अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय महामन्त्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल द्वारा किया गया।

इस अवसर पर आचार्यश्री ने कहा कि क्रोध भीषण ज्वाला के समान है जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति उचित अनुचित का भान भूल जाता है और इसके दावानल में भस्मीभूत हो जाता है। इस अवसर पर अनेक गणमान्य और गुरुभक्त उपस्थित थे।

नवकार आराधना में नई पहल

उदयपुर (स.सं.)

नागदा जं. में परम पूज्या साध्वीश्री तत्त्वदर्शनाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा की निश्रा में चल रहे चातुर्मासिक कार्यक्रमों में आयोजित श्री नवकार आराधना में नई पहल प्रारम्भ करने का निश्चय किया है। आराधना में एकासन में मात्र 9 आयटम से प्रतिदिन एकासना कराए जाएँ। पूर्व में साध्वीश्री ने 5 आयटम की स्वीकृति प्रदान की परन्तु श्रीसंघ के आग्रह पर 9 आयटम जिसमें प्रत्येक दिन 1 आयटम का त्याग करने का आदेश दिया। साध्वीश्री ने कहा कि सभी आराधकों को आराधना में सम्पूर्ण नियम का पालन करना अनिवार्य होगा। नित्य दर्शन-वन्दन करने गुरुभक्तों का आगमन हो रहा है।

पुण्य-सम्राट के जीवन पर कार्यक्रम

उदयपुर (स.सं.)

अहमदाबाद (अमराईवाड़ी) में परम पूज्या साध्वीश्री स्नेहलताश्रीजी म. सा. की सुशिष्या साध्वीश्री विज्ञानलताश्रीजी म. सा. आदि ठाणा-2 की निश्रा में चल रहे चातुर्मासिक कार्यक्रमों में बच्चों द्वारा गुरुदेवश्री जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के जीवन चरित्र पर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। बच्चों ने उत्साह से भाग लेते हुए आकर्षक प्रस्तुतियों द्वारा सभी का मनमोह लिया। साध्वीश्रीजी के दर्शन-वन्दन करने गुरुभक्तों का आगमन हो रहा है।

शान्तिकलश के एकासने एवं जप

उदयपुर (स.सं.)

नीमच (म.प्र.) में प. पू. साध्वीत्रयश्री पुण्यदर्शनाश्रीजी म. सा., श्री हर्षदर्शनाश्रीजी म. सा. एवं श्री विरतिदर्शनाश्रीजी म. सा. की पावन निश्रा में दिनांक 11 अगस्त 18 को पुष्य नक्षत्र के जाप श्री राजेन्द्रसूरि ज्ञान मन्दिर में हुए। दिनांक 12 अगस्त 18 को शान्ति कलश के एकासने में बच्चों एवं बड़े बुजुर्गों सभी ने भाग लिया। कुल 65 एकासन हुए सभी ने सामूहिक क्रिया की तथा 20 माला 'ॐ ह्रीं श्री शान्तिनाथाय नमः' का जाप किया। श्री शान्तिनाथजी की तस्वीर की स्थापना की गई जिसका लाभ श्री विजयसिंहजी गजेन्द्रसिंहजी चौधरी परिवार ने लिया एवं शान्ति कलश की स्थापना का लाभ श्री भैरूलालजी झमकलालजी झालतिया परिवार ने लिया तथा कलश भराने का लाभ श्री माणकलालजी अभिषेकजी नान्देचा परिवार ने लिया। श्रीसंघ द्वारा सभी को सामूहिक एकासने करवाए गये।

साध्वीजी की निश्रा में नित्य भक्तामर-पाठ एवं व्याख्यान में ज्ञान की सरिता बह रही है जिसका आचमन श्रद्धालु गुरुभक्त कर रहे हैं। निरन्तर दर्शनार्थ एवं वन्दनार्थ अनेक गुरुभक्तों का आगमन हो रहा है।

पर्यावरणप्रेमी की स्मृति में सम्पूर्ण देश में होगा पौधारोपण

उदयपुर (स.सं.)

परम गुरुभक्त, पर्यावरणप्रेमी श्री किशोरजी खिमावत की स्मृति में देश में सामाजिक, जनकल्याण के कार्यों को समर्पित अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् की अनेक शाखाओं द्वारा दिनांक 15 अगस्त 2018 स्वतन्त्रता दिवस को एक साथ वृहद् स्तर पर चतुर्थ वृक्षारोपण अभियान के अन्तर्गत पौधारोपण किया गया।

सम्पूर्ण देश की शाखाओं में हुए इस पौधारोपण आयोजन में सभी शाखाओं ने अपने नगर में पौधारोपण किए तथा यह संकल्प भी लिया कि जब तक यह पौधे पल्लवित नहीं हो जाते तब तक इनकी देखभाल परिषद् परिवार करेगा।

परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों का दक्षिण भारत में दर्शनार्थ प्रवास

उदयपुर (स.सं.)

अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद् के राष्ट्रीय पदाधिकारियों एवं दक्षिण भारत के पदाधिकारियों का विजयवाड़ा, चैन्नई व नेल्लोर नगरों में चातुर्मासार्थ बिराजित गुरु भगवन्तों के दर्शनार्थ एवं वन्दनार्थ प्रवास सम्पन्न हुआ।

दिनांक 3-8-2018 को विजयवाड़ा में साध्वीश्री आत्मदर्शनाश्रीजी म. सा. के दर्शन, वन्दन, प्रवचन श्रवण के पश्चात् दोपहर को श्रीसंघ व परिषद् परिवार की संयुक्त बैठक आयोजित की गई।

सायं 8 बजे नेल्लोर में परिषद् की बैठक की और उचित मार्गदर्शन किया।

दिनांक 4-8-2018 को चैन्नई महानगरी में मुनिराजश्री संयमरत्नविजयजी म. सा आदि ठाणा-2 के दर्शन-वन्दन-प्रवचन श्रवण किया।

दिनांक 5-8-2018 को मुम्बई महानगरी में भारतनगर में मुनिराजश्री वैभवरत्नविजयजी म. सा. आदि ठाणा, भायन्दर में साध्वीश्री योगनिधिश्रीजी म. सा. ठाणा-5 एवं खेतवाड़ी में साध्वीश्री ऋद्धिनिधिश्रीजी म. सा. ठाणा-5 के दर्शन-वन्दन कर सुखसाता पृच्छा की।

इस प्रवास में परिषद् मार्गदर्शक एवं श्रीसंघ वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री शान्तिलाल रामाणी, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रमेश धरू, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री ओ. सी. जैन, राष्ट्रीय महामन्त्री श्री अशोक श्रीश्रीमाल, मिडिया प्रभारी श्री बृजेश बोहरा, प्रदेश महामन्त्री दक्षिण भारत श्री सुजीत सौलंकी, पूर्व प्रान्तीय अध्यक्ष द. भा. श्री भैरूमल सेठ, राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री नवीन बद्लू एवं शिक्षा मन्त्री श्री भरत वोरा थे। सभी स्थानों पर धार्मिक शिक्षा सम्यग्ज्ञान वृद्धि कूपन योजना की बहुत प्रशंसा की गई।

संयम वन्दन यात्रा सम्पन्न

उदयपुर (स.सं.)

मालव प्रदेश की धन्यधरा को अपनी संयम ऊर्जा से आलोकित कर रहे त्रिस्तुतिक पट्ट परम्परा के गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं अन्य नगरों में चातुर्मासार्थ विराजित श्रमण-श्रमणिवृन्द के दर्शन-वन्दन एवं सुखसाता पृच्छा हेतु दो दिवसीय संयम वन्दन यात्रा अ. भा. श्री राजेन्द्र जैन नवयुवक परिषद्, मध्यप्रदेश इकाई अध्यक्ष श्री रमेश धारीवाल के नेतृत्व में परिषद् पदाधिकारियों के साथ आयोजित की गई।

संयम वन्दन यात्रा का प्रारम्भ दिनांक 10-8-2018 को मेघनगर में साध्वीश्री अनेकान्तलताश्रीजी म. सा.आदि ठाणा के दर्शन, वन्दन, प्रवचन श्रवण के पश्चात् अलीराजपुर में साध्वीश्री शासनलताश्रीजी म. सा. ठाणा-14 के दर्शन-वन्दन के बाद दोपहर को बैठक आयोजित की गई। यहाँ से यात्रा कुक्षी पहुँची जहाँ साध्वीश्री अविचलदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन कर सुखसाता पृच्छा करते हुए इन्दौर में साध्वीश्री अमितदृष्टाश्रीजी म. सा. आदि ठाणा के दर्शन-वन्दन कर रात्रि उज्जैन विश्राम किया।

दिनांक 11-8-2018 को उज्जैन में विराजित पू. गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. आदि श्रमण-श्रमणिवृन्द के दर्शन-वन्दन व सुखसाता पृच्छा कर प्रवचन श्रवण किया। यहाँ पर गच्छाधिपतिश्री से परिषद् की आगामी संगठनात्मक कार्य योजना पर मार्गदर्शन प्राप्त किया और श्रीसंघ व परिषद् परिवार से चर्चा की। यहाँ से यह यात्रा भाटपचलाना पहुँची जहाँ विराजित साध्वीश्री भाग्यकलाश्रीजी म. सा. के दर्शन-वन्दन किए। यहाँ से महिदपुर रोड़ जाकर साध्वीश्री विद्वद्गुणाश्रीजी म. सा. के दर्शन-वन्दन करके सुखसाता पृच्छा की। यात्रा में मिडिया प्रभारी श्री बृजेश बोहरा, वरिष्ठ उपाध्यक्ष श्री मोहित तांतेड़, प्रान्तीय महामन्त्री सुधीर लोढ़ा आदि पदाधिकारी उपस्थित थे।

देश-भक्ति

-देहदानी डॅा 'पारदर्शी', उदयपुर (राज.)

जननी जन्मभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर है। माता तो केवल बाल्यकाल में ही हमें गोद में उठाती है, किन्तु मातृभूमि अन्त में भी हमें अपनी गोदी में स्थान देती है। अत: हम इस धरती और देश के चिर ऋणी हैं। हमें इसका ऋण चुकाने हेतु सदैव त्याग व बलिदान के लिए तैयार रहना चाहिए तभी हम सच्चे अर्थों में देश भक्त कहलाने के हकदार होंगे तथा समस्त देशवासियों को एक परिवार मानें और इसमें परिवार की भाँति रहें।

हिलमिल रहें सब, कौमी-एकता हो तब,
जाति-पाँति-धर्म की ये, व्यर्थ तकरार है।
भाषा की लड़ाई छोड़ें, वेश का अन्तर तोड़ें,
जीओ और जीने दो का, करना प्रचार है।
अखण्ड भारत रहे, प्रेम की सरिता बहे,
अहिंसा का जीवन में, रखना आधार है।
"पारदर्शी" ज्ञान मिले, खुशियों के फूल खिले,
प्यारे हिन्दुस्तान से ही, करें सभी प्यार हैं।

इस देश की मिट्टी में हमें अपनापन लगे, इससे हमारा आत्मिक लगाव हो। हम मन-वचन और कर्म से भारत के साथ जुड़े तथा अवसर आने पर अपना सर्वस्व भारत के हित न्यौछावर कर देने को तैयार रहें। हमारे मन में देश-सेवा तथा देश-प्रेम की भावना जागे। इसकी एकता तथा अखण्डता सतत कायम रहे और बढ़े। इस बगीचे में जन्म लेनेवाला, खिलने और फलने-फूलनेवाला हर फूल एकता के सूत्र में पिरोया रहे। अपनी सुगन्ध से सबको सुगन्धित कर मनसा-वाचा-कर्मणा सबको सुख देता रहे। यही हमारा परम कर्त्तव्य है, क्योंकि हमने इसी के अन्न-जल से अपने शरीर को हृष्ट-पुष्ट किया है। इसी की वायु में साँस ले रहे हैं। इसी की कृपा पर जिन्दा हैं। इसकी माटी को अपने सिर पर लगावें, नमन करें और उसकी पूजा-अर्चना कर गौरव बढ़ावें।

कहलाई शान्ति दूत, अहिंसा की अग्रदूत,
प्रेम का पढ़ाये पाठ, ऐसी माँ भू भारती।
ज्ञान दे विज्ञान दिया, ऋषि-मुनि ध्यान किया,
तपोभूमि बन पापी, पतितों को तारती।
चिड़िया सोने की जान, यन्त्र-मन्त्र में प्रधान,
काली-दुर्गा-अम्बा बन, वैरियों को मारती।
तेरी महिमा महान, मेरे प्यारे हिन्दुस्तान,
"पारदर्शी" संग सारा, विश्व करे आरती।

देश-भक्ति का आशय है - देश की भूमि, देश के निवासियों और राष्ट्र के प्रति, राष्ट्रीयता के प्रति लगाव है, हमारी आत्मीयता है, यह अनन्तकाल तक बनी रहे। यही अनन्यभाव चिरकाल तक दृढ़ होता रहे। हम देश की प्रगति, समृद्धि, अखण्डता एवं एकता के प्रति प्रयत्नशील रहें। हमारी सम्पूर्ण आस्था, निष्ठा और श्रद्धा भारत तथा भारतीयों के प्रति अटूट हो। हम सब इस देश के सर्वांगीण विकास और सार्वभौमिकता की रक्षा हेतु कृत संकल्पित रहें, अपने कर्त्तव्य के निर्वाह में कटिबद्ध हों। राष्ट्र के प्रति इसी आत्मीय-लगाव को ही राष्ट्र-धर्म, राष्ट्र-सेवा, राष्ट्र-प्रेम तथा राष्ट्र-भक्ति कहते हैं जो सम्पूर्ण रूप से देश-भक्ति का आधार स्तम्भ है। अत: देश-भक्ति का क्षेत्र, अर्थ एवं स्वरूप पर्याप्त रूप से व्यापक, विराट और विशाल है। जिसका गहन चिन्तन प्रत्येक नागरिक के लिए परमावश्यक है। इसका सम्बन्ध दिल से अधिक है, दिमाग से कम। मन का पूर्ण समर्पण ही ऐसे मनोभावों को जन्म देता है और हम त्याग, बलिदान, सर्वस्व न्यौछावर अथवा सब कुछ उत्सर्ग करने के लिए तैयार हो जाते हैं। जिसमें देश के प्रति अन्तरंग भाव से, मानसिक रूप से अथवा भावनात्मक दृष्टि से लगाव नहीं, वह देश-भक्ति को नहीं समझ सकता। इसमें प्रदर्शन या आडम्बर को स्थान नहीं मिलता। इसके क्रिया-कलाप बाह्य कम और अन्तर्निहित अधिक हैं।

देश-भक्ति में हमारे आचरण और कर्म से जन-जन लाभान्वित होता है, जन-जन का मन आह्लादित होता है। राष्ट्र की नस-नस में इनकी साँसों की धड़कन सुनाई देती है। राष्ट्र के प्रति अपने आपको समर्पित कर देनेवाले देश भक्तों में जब देश-भक्ति का ज्वार उठता है तब उनके सामने बस एक ही बात होती है कि मैं अपने आपको देश हित में कैसे समर्पित करूँ। वह त्याग नहीं आत्म-त्याग चाहता है। वह कह उठता है-

समझो शामत आई, आँख जिसने उठाई,
कितने ही आततायी, मारे गए क्षण में।
लाखों देश भक्त खड़े, देश-रक्षा हित लड़े,
लड़ा था प्रताप जैसे, हल्दीघाटी रण में।
ज्ञानी वीरों की है खान, मेरा प्यारा हिन्दुस्तान,
त्याग-तप-शौर्य भरा, जहाँ कण-कण में।
"पारदर्शी" ज्ञान-दान, विश्व गुरु पहचान,
नागमणि चमके ज्यों, शेषनाग फण में।

स्वामी विवेकानन्द मानवता का प्रचार करने एवं मानव-मानव को भ्रातृत्व-भाव का शाश्वत-सन्देश देने विदेशों में गए। वे घूमते-घूमते जापान पहुँचे। टोकियो में एक दिन उदास-भाव से उन्होंने एक आठ-दस वर्ष के बालक से कहा- क्या जापान में आम नहीं मिलते ? बच्चे ने तुरन्त उत्तर दिया- मिलते हैं श्रीमन्! आप ठहरिए, मैं अभी लाया। थोड़ी ही देर में बालक आठ-दस आम एक टोकरी में ले आया।

स्वामीजी ने पूछा- कितने के हैं ये आम ?

बालक ने कहा- आप मेरे देश के मेहमान हैं, मैं इनका कुछ न लूँगा।

स्वामीजी ने कहा- मैं बिना कुछ दिये इन्हें स्वीकार नहीं करूँगा।

तब बालक बोला- तो आप मुझे विश्वास दिला दीजिए कि आप कभी यह नहीं कहेंगे कि जापान में आम नहीं मिलते।

स्वामीजी गद्गद् हो गए। यह है देश-भक्ति।

देश में अनेक स्थानों पर होगी श्री नवकार आराधना

उदयपुर (स. सं.)

प. पू. गुरुदेव पुण्य-सम्राट श्रीमद्विजय जयन्तसेनसूरीश्वरजी म. सा. के पट्टधर गच्छाधिपति श्रीमद्विजय नित्यसेनसूरीश्वरजी म. सा. एवं माण्डवपुर तीर्थोद्धारक आचार्यदेवेश श्रीमद्विजय जयरत्नसूरीश्वरजी म. सा. की पावन निश्रा में तथा उनके आज्ञानुवर्ती श्रमण-श्रमणिवृन्द की निश्रा में 56 वर्षों से अनवरत चल रही श्री नवकार आराधना भव्य रूप से दिनांक 18 अगस्त 2018 से प्रारम्भ होगी तथा इसकी पुर्णाहूति 26 अगस्त 2018 को होगी। इस नवदिवसीय आराधना में प्रतिदिन आराधक प्रवचनों के माध्यम से गुरु भगवन्तों के द्वारा नमस्कार मन्त्र की महिमा बताते हुए उसके द्वारा होने वाले अलौकिक लाभ को भी बताएँगे।

श्री नवकार आराधना में प्रतिवर्ष हजारों आराधक श्री नमस्कार मन्त्र की आराधना करते हैं। इस आराधना में आराधक को एक ही स्थान पर बैठ कर नव दिवस तक श्री नमस्कार मन्त्र की 20 माला गिनना, प्रतिदिन एकासन तप, दोनों समय देववन्दन, प्रतिक्रमण करना होता है। आराधक पुरुष वर्ग को श्वेत धोती और महिला वर्ग को श्वेत साड़ी या परिधान अनिवार्य पहनना होता है।

उज्जैन में गच्छाधिपतिश्री नित्यसेनसूरिजी म. सा. की निश्रा में श्री नवकार आराधना का सम्पूर्ण लाभ श्री मोतीलालजी, श्रेणिकलालजी, राजेशकुमारजी वनवट परिवार, खाचरौद निवासी ने लिया।

श्री माण्डवपुर तीर्थ में आचार्यदेवेशश्री जयरत्नसूरिजी म. सा. की निश्रा में श्री नवकार आराधना के सम्पूर्ण लाभ चातुर्मास लाभार्थी श्रीमती अणसीदेवी गोपीलालजी श्रीश्रीमाल परिवार पादरू (राज.) ने लिया है।

देश के विभिन्न नगरों में होने वाली इस अनुपम आराधना के लिए वहाँ के श्रीसंघों ने गुरु भगवन्तों के निर्देशानुसार सभी तैयारियाँ पूर्ण कर ली है।

नोट- लोकप्रिय 'यतीन्द्र वाणी' पाक्षिक के ग्राहकों से निवेदन है कि आपका पता अगर बदल गया है तो अपना नवीन पता प्रधान कार्यालय पर भेजने की कृपा करावें, जिससे आपको अंक प्राप्त हो सके। -सम्पादक

स्वतन्त्रता दिवस पर समस्त देशवासियों को यतीन्द्र वाणी परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

श्री शाह का हृदयाघात से देहावसान

उदयपुर (स. सं.)

श्री शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, मोटेरा-अहमदाबाद के कर्मठ सदस्य श्री विजयभाई जे. शाह का दिनांक 4-8-2018 को हृदयाघात होने से दुःखद देहावसान हो गया।

देहावसान होने के मात्र एक दिन पूर्व आप सपत्नीक श्री माण्डवपुर तीर्थ में दर्शनार्थ-यात्रार्थ पधारे थे। यहाँ दर्शन-वन्दन करने के पश्चात् जब शिलान्यास की निर्धारित तिथि आसोज शुक्ला- 3, दिनांक 11-10-2018 का समाचार सुना तब तुरन्त अपनी भावना व्यक्त करते हुए कहा कि 'मुझे शिलान्यास में क्या लाभ लेना है गुरुदेव आदेश दीजिए। मैं उस पूरे कार्यक्रम में उपस्थित रहूँगा।'

पुण्य-सम्राट गुरुदेवश्री तथा संयमवयः स्थविर योगिराजश्री के प्रति आपकी अटूट श्रद्धा-भक्ति एवं समर्पण था।

आप अपने पीछे परिवार में धर्मपत्नी श्रीमती स्मिताबेन शाह जो जिला सेशन जज से स्वेच्छिक निवृत्ति लिए हुए है। दो पुत्र, पुत्र वधू तथा पौत्र भी हैं।

श्री विजयभाई शाह के आकस्मिक देहावसान पर यतीन्द्र वाणी परिवार संवेदना प्रकट करते हुए श्री अरिहन्तदेव एवं दादागुरुदेव से अभ्यर्थना करता है कि दिवंगत आत्मा को सद्गति प्रदान करे एवं शोक सन्तप्त परिवारजनों को इस असह्य दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

सम्पादक
यतीन्द्र वाणी परिवार
मोटेरा-अहमदाबाद

मरना सबको आवेगा, जीना जीना जान।
आत्मा तो मरती नहीं, अमर बना पहचान॥
-देहदानी ॐ 'पारदर्शी'

यतीन्द्र वाणी में प्रकाशनार्थ सामग्री निम्न नम्बर व ई-मेल पर भिजावें।
कुलदीप 'प्रियदर्शी' 09413763991
e-mail : priyadarshikuldeep@gmail.com

योगी-वाणी

क्रोध मनुष्य के भीतर के आत्मधन को नष्ट कर देता है। क्रोधरूपी दावानल को हम समता के नीर से शान्त कर सकते हैं।

इसलिए जीवन में तामस वृत्ति को त्यागना चाहिये और समता को अंगीकार करना चाहिये।

-योगिराज गुरु श्री शान्तिविजयजी

आत्मीय निवेदन

समस्त श्रीसंघों के अध्यक्षों, साधु-साध्वी भगवन्तों से निवेदन है कि आप अपने यहाँ होने वाले कार्यक्रमों के समाचार आदि प्रकाशित सामग्री प्रत्येक मास की 10 व 20 तारीख तक 'यतीन्द्र वाणी' में प्रकाशनार्थ भिजावें।

-सम्पादक, यतीन्द्र वाणी,
श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार,
साबरमती-गाँधीनगर हाइवे, पो.- मोटेरा-382 424

श्री राजेन्द्र-धनचन्द-भूपेन्द्र-यतीन्द्र-विद्याचन्द्र-जयन्तसेन-शान्ति गुरुवरों के विचारों एवं कार्यों को समर्पित
सम्पूर्ण जैन समाज का ज्ञानवर्धक लोकप्रिय हिन्दी पाक्षिक पत्र

यतीन्द्र वाणी

हिन्दी पाक्षिक

सम्पादक
पंकज बी. बालड़

स. सम्पादक
कुलदीप डोंगी 'प्रियदर्शी'

प्रधान कार्यालय
श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)

सदस्य शुल्क

संरक्षक सं.	11000/- रुपये
सदस्य सं.	7100/- रुपये
आजीवन ग्राहक	1000/- रुपये
एक प्रति	5/- रुपये

विज्ञापन दर

प्रथम पूरे पृष्ठ के -	5100/- रुपये
अन्य पूरे पृष्ठ के -	2100/- रुपये
अन्तिम पूरे पृष्ठ के -	3100/- रुपये
अन्दर के एक चौथाई के -	801/- रुपये

विशेष सूचना- प्रत्येक मास की 10 एवं 20 तारीख तक विज्ञापन एवं समाचार कार्यालय पर भेजना अनिवार्य है। चैक या ड्राफ्ट 'यतीन्द्र वाणी' के नाम से भेजें।

* लेखक के विचारों से संस्था और सम्पादक का सहमत होना अनिवार्य नहीं। * सम्पादक, यतीन्द्र वाणी

प्रेषक :
यतीन्द्र वाणी (हिन्दी पाक्षिक)
C/o. श्री राजेन्द्र-शान्ति विहार
विसामो बंग्लोज के पास,
विसत-गाँधीनगर हाइवे,
मोटेरा, चान्दखेड़ा, साबरमती,
अहमदाबाद-382 424 (गुजरात)
दूरध्वनि : 079-23296124,
मो. 09426285604
e-mail : yatindravani222@gmail.com
www.shrirajendrashantivihar.com

'Reg. Under Postal Registration No. AHD-C/22/2018-2020 VALID UPTO 31st December-2020 issued by the SSPO's Ahmedabad City Division, permitted to post at Ahmedabad PSO on 1st & 15th every month'
RNI No. GUJ/HIN/1999/321
Licensed to Post Without Prepayment No. PMG/HQ/070/2018-20 valid up to 31/12/2020

श्री.....
.....
.....

स्वत्वाधिकार प्रकाशक, मुद्रक- शान्तिदूत जैनोदय ट्रस्ट, सम्पादक- पंकज बी. बालड़, यतीन्द्र वाणी हिन्दी पाक्षिक, श्री राजेन्द्र शान्ति विहार, पो.- मोटेरा-382 424 से प्रकाशित एवं सनसाईन फोटो प्रिन्ट, एफ-4, तुषार सेन्टर, नवरंगपुरा, अहमदाबाद में मुद्रित